मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 11 **MTT–041**

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.टी.टी.–041 : सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

समय : 3 घंटे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिए गए हैं।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग **250–300** शब्दों में दीजिए : 2×15=30

(i) कहावतों का अर्थ और स्वरूप बताते हुए सिंधी और हिंदी में प्रयुक्त समान कहावतों के **पाँच** उदाहरण, वाक्य प्रयोग करते हुए दीजिए।

(ii) वाक्य के प्रकारों पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

(iii) विशेषण को परिभाषित करते हुए सिंधी भाषा के संदर्भ में विशेषण के भेदों पर प्रकाश डालिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

(i) लताड़णु

(ii) हिड॒की

(iii) सूब॒टु

(iv) मुङ

(v) लिकाइणु

(vi) मुशाइरो

(vii) ब॒ाएतालु

(viii) बख़ील

(ix) पोरिहियो

(x) तंदु

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिंदी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

(i) बनावट

(ii) झेलना

(iii) ननिहाल

(iv) फुर्तीला

(v) बंदरिया

(vi) मार्गदर्शन

(vii) मताभिव्यक्ति

(viii) रसोइया

(ix) लाभांश

(x) मरोड़

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** कहावतों/मुहावरों का सिंधी से हिंदी/हिंदी से सिंधी में अनुवाद करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 10

(i) जहिंजो कमु सोई करे, ॿियो करे त घाटो भरे।

(ii) टकिरीअ खे सूर थिया, ॼाई कुई।

(iii) जिते वणु नाहे, उते कांडेरो बि दरखतु।

(iv) धणी हमराहु त कंहिंजो डपु न डाउ।

(v) ॾंदें आङुरियूं ॾियणु।

(vi) चिकना घड़ा होना

(vii) कान का कच्चा होना

(viii) दूध की मक्खी की तरह निकाल देना

(ix) किताबी कीड़ा

(x) ठीकरा फोड़ना

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 5

(i) जड̱हिं-जड̱हिं अधर्मु वधंदो आहे, तड̱हिं-तड̱हिं ईश्वर जो अवतारु थींदो आहे।

(ii) पूरणमासीअ जो चंडु निकितो ऐं चइनी पासे चांडोकी छाइजी वेई।

(iii) ग̱ाल्हि कर्यां थो उन सुख जी, जो अनंतु आहे, अमरु आहे, अनमोलु आहे।

(iv) जेसितांईं नजर वञे थी, प्रकृतीअ जी लासानी सूंह पखिड़ियल आहे।

(v) उहो वीरु ब̱ालकु अभिमन्यू हो, जहिं चक्रव्यूह जो भेदनु कयो।

(vi) ही भारतु देशु आहे, जहिंखे ऋषियुनि जो देशु चयो वेदों आहे।

(vii) पखी उड़ामनि पिया, छो त सिजु उभिरी चुको आहे।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 5

(i) सत्य और सेवा की मूर्ति संत कंवरराम मशहूर भक्त थे।

(ii) हो सकता है आज भरत का राम से मिलाप हो।

(iii) स्वच्छ हवा के लिए पेड़–पौधे लगाने चाहिए।

(iv) भारतीय संस्कृति में गुरु–शिष्य परंपरा का बड़ा महत्व है।

(v) धर्म का आधार लेकर मनुष्य अपने अंदर झाँक सकता है।

(vi) मुकेश ने परीक्षा में सफलता पाने के लिए खून–पसीना एक कर दिया।

(vii) कितनी ही विपत्तियाँ आईं, किंतु रमेश टस से मस नहीं हुआ।

7. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15

(i) लीलाराम रूचंदाणीअ जो जन्म 24 जुलाई, 1924 में सिंधु जे ठारूशाह जिले नवाबशाह में थियो। लीलाराम रूचंदाणी ब॒हूगुणी शख़्सियत जो धणी हो। हिकु सुठो तालीमदान, नक़ादु, इतिहासकार, अदीब ऐं खोजनीक जे रूप में ज॒ातो सुञातो वञे थो। सिंधी अदब में हुन बेबाकीअ सां क़लम आज़माई कई आहे। हिन साहिब अदब जी शुरूआत कहाणी लिखण सां कई। संदसि पहिरीं कहाणी 'भग॒ल चूड़ियूं' हुई।

सिंधी भाषा सां गड॒ु हिंदी ऐं अंग्रेजी भाषा जो पिणु ज॒ाणू हो। हिन केतिरा किताब तर्जुमो पिणु कया हुआ। विरहाङे खां पोइ ही साहिब अजमेर में अची रहियो। पूरी जाखोड़ सां सिंधी अदबी खेतर में कमु करण लग॒ो। खास करे अख़बारनवीसीअ जे कार्य सां जुड़ी कमु कयाईं खेसि हिकु बेहतरीन अख़बारनवीस जे दर्जे में शुमारे सघिजे थो।

विरहाड़े खां अगु ई सिंधु में हूं 'संसार समाचार', 'हिंदू संसार', 'आज़ाद' वग़ैरह रोज़ानियुनि अख़बारूनि सां गडु 'चोडस' हफ़्तेवार 'सिंधु रसाले' सां बि जुड़ियो रहियो ऐं अलग अलग विषयनि ते लिखंदो रहियो। अगिते हली 'हिंदू' रोज़ानी 'प्रकाश' ऐं आशावाणी हफ्तेवार 'फिल्मी दुनियां' महावार अखबारूनि जो सह–सम्पादक ऐं सम्पादक थी रहियो। लीलाराम बर्खु अदीब हो।

(ii) प्रो. अज़ीज़ इल्म ऐं अकुल, अदब ऐं तहजीब जी हिक नई रोशनी खणी आयो, जंहिं सिंधी जातीअ ऐं जीवन में जिंसी इंकलाब आणे छडियो। स्कूल खां बाहिर लेखराज जे घर जे वेझो ई मुशाइरनि जूं महिफलूं लगदियूं हुयूं। उन्हनि में सिंधु जा मशहूर शाइर पंहिजो कलाम बुधाईंदा हुआ। जहिड़ो कि सांगी, कासिम फ़ाज़िल शाह, आज़िज़ हाफ़िज़ जिनि सभिनी जा दीवान लिखिया हुआ। उन बारे में लेखराज पाण पंहिजियुनि यादिगिरियुनि में लिखे थो 'उन्हीअ टाणे मां हैदराबाद में मीरचंदाणी घिटीअ में रहंदो होसि जंहिजे मुंह ते सांवल

शाह जो पिड़ु हो ऐं उन जे भड़ में निहाईं जो पिड़ु हो ऐं थोरो परेड वाढनि जो पिड़ु निहाईं ऐं वाढनि जे पिड़िन जे मस्जिदुनि में शहर व सुखन जो चरचो जारी हो।' हैदराबाद में नेम सां शहरगोई करण लग॒ो ऐं पहिरियों दफो मुशाइरे में बि 'अज़ीज़' जे तख़लुस सां पंहिंजो कलाम बुधायाईं। ही साहिबु शाइर थी साहित्यक खेतर में आयो ऐं मुख्य तोर शाइर ई थी रहियो। शइर जी हर शाख ते तबअ आज़माई इ कयाईं। ही मसनवी रचींदड हिकु ई हिंदू शाइरु हो।

मसनवीय खां सवाइ, रुबाई, ग़ज़ल ऐं नज़्म हुन जा प्रिय विषय रहिया। संदसि प्यारी सिंफ ग़ज़ल हुई। उन सिंफ में सज॒ी सिंधु में संदसि केरु बि सानी न हो। सभु ग़ज़लगू खेसि उस्ताद करे मञींदा हुआ। संदसि नाटक न रुग॒ो ज़िंदगीअ से टिनि मुख्य पहलुनि (समाजी, मुल्की ऐं इक़तसादी) जी तर्जुमानी कनि था, पर माईदार ऐं मुहावरे दार ब॒ोलीअ में नाटकी फ़न जो पिणु मिसाल पेश कनि था।

8. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 15

(i) भारत की जनक्रांति में सिंधी महिलाओं ने अपने प्राण हथेली पर रखकर मातृभूमि को स्वतंत्र करवाने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

सभी का एक ही ध्येय था, एक ही लक्ष्य था—देश को स्वतंत्र कराना। सिंधी महिलाओं ने पुरुषों के बराबर यातनाएँ सहीं। भारत के मुक्ति संग्राम में बालकों से लेकर वृद्धों तक, सभी ने अपनी-अपनी भूमिका का निर्वहण किया। बड़े-बड़े नेताओं ने जहाँ बड़ी-बड़ी भूमिकाओं का निर्वहण किया वहीं उनके साथ हजारों की संख्या में सिंधवासियों ने छोटी-छोटी महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं, दिन-रात मोर्चे पर डटे, आंदोलनकारियों एवं उनके परिवारों को धन, वस्त्र और जीवनयापन के लिए उपयोगी वस्तुएँ जुटाना तथा भरण-पोषण करना भी एक महत्वपूर्ण कार्य था। भले ही ऐसे गुमनाम पुरुषों और महिलाओं को स्वाधीनता

सेनानी का दर्जा नहीं मिला, लेकिन उनका योगदान स्वाधीनता सेनानियों से कम नहीं था। सिंधी भामाशाहों ने अपने खजानों के कोष स्वतंत्रता सेनानियों के लिए खोल दिए थे; उनकी सहायता के बिना कोई कार्य पूरा नहीं हो सकता था। ऐसे सहयोगियों की भूमिका मातृभूमि को स्वतंत्र करवाने वाले स्वतंत्रता सेनानियों से किसी भी रूप में कम महत्वपूर्ण नहीं थी।

(ii) सिंध के डहरकी गाँव की एक किवदंती प्रचलित है। एक बार एक असहाय महिला का छोटा–सा बालक प्रभु को प्यारा हो गया। उसके विछोह में वह फूट–फूटकर रोने लगी। यह देख वहाँ खड़े एक श्रद्धालु ने उस महिला से कहा, आज गाँव में संत कंवरराम का हरि–कीर्तन होने वाला है। उनमें ऐसी अलौकिक शक्ति है कि वे तुम्हारे बालक को पुनः जीवित कर सकते हैं, लेकिन उन्हें बालक के मृत होने की खबर न होने देना। यह सुनकर उस महिला के हृदय में आशा का दीपक जल उठा।

वह महिला अपने मृत बालक को गोद में लिए वहाँ पहुँची, जहाँ संत कंवरराम भगत हरि–कीर्तन कर रहे थे। महिला ने अपना मृत बालक संत की गोद में देते हुए कहा, "भगत साहिब, मेरे बच्चे की चिरायु के लिए इसे प्रभु के नाम की लोरी देकर, मुझ अबला पर कृपा करें।" संत कंवरराम उसे जीवित बालक जानकर, तन्मयता के साथ ममतामयी लोरी देने लगे। कुछ ही पलों में ईश–कृपा से उस बालक में प्राण लौट आए।

यह चमत्कार देखकर वह महिला संत जी के चरणों में गिर कर फूट–फूटकर रो पड़ी। जब उसने बालक के मृत होने की बात बताई तो संत तथा वहाँ उपस्थित सभी लोग स्तब्ध रह गए। तब मृदुभाषी संत कंवरराम ने उस महिला से नम्रता से कहा, "माता, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था, यह तो प्रभु ने इस दास की लाज रख ली, वरना मैं कहीं का न रहता।"

× × × × ×